(अपठित गद्यांश व काव्यांश)

अध्याय — 1 अपठित गद्यांश

स्मरणीय बिंदु

अपठित गद्यांश वह गद्य खंड है जो पहले पढ़ा न गया हो। किसी भी गद्य खंड को पढ़कर स्वयं समझने और उसके अंतर्गत पूछे गए प्रश्नों के उत्तर स्वयं दे पाने की क्षमता का विकास करना ही अपठित गद्यांश को पाठ्यक्रम में रखने का उद्देश्य होता है।

सामान्य सुझाव—

- अपठित गद्यांश के प्रश्नों को हल करने के लिए सर्वप्रथम संपूर्ण गद्यांश को कम से कम दो बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए।
- गद्यांश को एकाग्रता से पढ़ने के बाद उसके मूलभाव को समझना चाहिए तथा उसके बाद प्रश्नों के उत्तर का सही विकल्प चुनना चाहिए।
- गद्यांश का शीर्षक लिखते समय पूरे गद्यांश के भाव को ध्यान में रखना चाहिए, किसी एक भाव को नहीं।
- अपठित गद्यांश के शीर्षक का चयन, सार्थक एवं मूल-भाव को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाला शब्द या शब्द समूह अथवा वाक्यांश का सही उत्तर चुनना चाहिए।

नोट—गत वर्ष की परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों को सी.बी.एस.ई. प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 2021 के पैटर्न के अनुसार संशोधित किया गया है।

❑❑

अध्याय — 2 अपठित काव्यांश

स्मरणीय बिंदु

अपठित काव्यांश वह कविता या गीत है, जो पहले से न पढ़ा गया हो। किसी भी काव्यांश को बिना किसी की सहायता से पढ़ना और पढ़कर उसे समझने की प्रतिभा का विकास करना ही अपठित काव्यांश का लक्ष्य है।

सामान्य सुझाव

- सर्वप्रथम अपठित पद्यांश या काव्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ें।
- सभी तत्सम तथा कठिन शब्दों को समझने का प्रयास करें।
- प्रत्येक प्रश्न के उत्तर को सही विकल्पों में से चुनने का प्रयास करें।
- शीर्षक चुनते समय सम्पूर्ण काव्यांश को ध्यान में रखकर ही काव्यांश के मूल भाव (केंद्रीय भाव) का विकल्पों से चयन करें।
- शीर्षक का चयन सही व सोच समझकर ही करें।

❑❑

(व्याकरण–बोध)

अध्याय — 3 रचना के आधार पर वाक्य भेद

स्मरणीय बिंदु

सामान्य सुझाव

- वाक्य भेद के नियमों को ध्यानपूर्वक समझे बिना सही उत्तर पहचानना संभव नहीं है। अत: उदाहरणों की सहायता से नियमों को समझ कर निरंतर अभ्यास करते रहें।
- छात्र वाक्य रूपांतरण करते समय प्राय: लिंग, काल का ध्यान नहीं रखते।
- छात्र मिश्र और संयुक्त वाक्यों का पर्याप्त ज्ञान न होने के करण भ्रमित होते हैं।

वाक्य—ऐसा सार्थक शब्द-समूह जो व्यवस्थित हो तथा पूरा आशय प्रकट कर सके, वाक्य कहलाता है। उदाहरणार्थ—

श्रीकृष्ण ने धर्म की संस्थापना की।

वाक्य के अंग (घटक)—जिन अवयवों को मिलाकर वाक्य की रचना होती है, उन्हें वाक्य के अंग कहते हैं।

वाक्य के मूल एवं अनिवार्य अंग हैं—कर्ता एवं क्रिया। इनके बिना वाक्य की रचना संभव नहीं है।

जैसे—(i) गीता गाएगी (ii) सोहन नाचेगा।

अत: कर्ता और क्रिया वाक्य के अनिवार्य घटक हैं। इनके अतिरिक्त वाक्य के अन्य घटक भी होते हैं।

जैसे—विशेषण, क्रिया विशेषण आदि। ये घटक ऐच्छिक घटक कहलाते हैं।

कर्ता और क्रिया पक्ष के अनुसार वाक्य के दो पक्ष होते हैं—

(i) उद्देश्य—वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, वही उस वाक्य का उद्देश्य है। इसके अन्तर्गत कर्ता तथा कर्ता का विस्तार (विशेषण, संबंधबोधक, भावबोधक आदि) आ जाते हैं।

(ii) विधेय—उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, वह 'विधेय' है। इसके अन्तर्गत क्रिया, क्रिया-विस्तार, कर्म, कर्म-विस्तार आदि आ जाता है।

उद्देश्य और विधेय के योग से ही वाक्य, संरचना के स्तर पर पूर्ण होता है तथा किसी भाव अथवा विचार को व्यक्त कर पाता है।

	उद्देश्य	विधेय
1.	सुमन	अध्यापिका है।
2.	छात्रावास में रहने वाले सभी लड़के	सिनेमा देखने जा रहे हैं।
3.	मैं	दिल्ली में रहने वाली सखी से मिली।

उद्देश्य तथा उद्देश्य का विस्तार

	वाक्य	उद्देश्य	उद्देश्य का विस्तार	विधेय
1.	वीर हनुमान ने लंका में आग लगा दी।	हनुमान ने	वीर	लंका में आग लगा दी।
2.	तेजस्वी चाणक्य, मंत्री बनने में सफल रहा।	चाणक्य	तेजस्वी	मंत्री बनने में सफल रहा।

विधेय तथा विधेय का विस्तार			
वाक्य	**उद्देश्य**	**विधेय**	**विधेय का विस्तार**
1. वीर हनुमान ने लंका में आग लगा दी।	वीर हनुमान ने	आग लगा दी	लंका में
2. तेजस्वी चाणक्य, मंत्री बनने में सफल रहा।	तेजस्वी चाणक्य	सफल रहा	मंत्री बनने में

वाक्य के भेद—वाक्य के भेद दो आधार पर होते हैं—

1. रचना के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर

टिप्पणी—आपके पाठ्यक्रम में केवल रचना के आधार पर वाक्य के भेद-सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाएँगे।

रचना के आधार पर वाक्य भेद—रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं—

1. सरल वाक्य

2. संयुक्त वाक्य

3. मिश्र वाक्य

1. सरल वाक्य—जिन वाक्यों में एक ही मुख्य क्रिया होती है, उसे सरल वाक्य कहते हैं।

जैसे—**(i)** वर्षा हो रही है।

(ii) बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।

(iii) मैं दिन-भर सोया।

(iv) उन्होंने हद पार कर दी होगी।

(v) पाकिस्तान कई वर्षों से आतंकवाद फैलाए चला जा रहा है।

उपरोक्त सभी वाक्यों में मुख्य क्रिया एक ही है। आकार में छोटे-बड़े होते हुए भी रचना की दृष्टि से ये वाक्य सरल वाक्य हैं। सरल वाक्यों को साधारण वाक्य के नाम से भी जाना जाता है।

मुख्य क्रिया के अलावा जो पद क्रिया के सहायक बनते हैं, उन्हें सहायक-क्रिया कहते हैं।

2. संयुक्त वाक्य—जब दो या दो से अधिक स्वतन्त्र उपवाक्य योजक शब्दों (समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय) द्वारा जुड़े हुए हों, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं।

जैसे— **(i)** बादल गरजे और बिजली चमकने लगी।

(ii) गंगा तट पर नहा लेना या मुँह धो लेना।

(iii) वर्षा होने वाली है इसलिए जल्दी घर आ जाना।

(iv) चुपचाप चले जाओ, नहीं तो बहुत बुरा होगा।

(v) बोलो परन्तु कटु सत्य न बोलो।

(vi) ठीक से खाओ अथवा रहने दो।

उपर्युक्त उदाहरणों में वाक्य 'या', 'इसलिए', 'नहीं तो', 'परन्तु', 'अथवा' अव्यय शब्दों से जुड़े हुए हैं। योजकों की सहायता से जुड़े होने के कारण ये संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।

पहचान—संयुक्त वाक्य और, तथा, एवम्, इसलिए, अतः, नहीं तो, अन्यथा, वरना, या, किन्तु, परन्तु, मगर, बल्कि, फलतः, परिणामस्वरूप आदि समानाधिकरण समुच्चयबोधक से जुड़े रहते हैं। यदि इन योजकों को हटा दिया जाए, तो प्रत्येक संयुक्त वाक्य के दो-दो स्वतन्त्र वाक्य बन जाएँगे।

3. मिश्र वाक्य—जिन वाक्यों की रचना में एक प्रधान उपवाक्य तथा शेष अन्य उस पर आश्रित उपवाक्य होते हैं, उसे मिश्र वाक्य कहते हैं।

जैसे—**(i)** जब बादल गरजे तब बिजली चमकने लगी।

(ii) अध्यापक ने कहा कि कल विद्यालय बंद रहेगा।

(iii) मेरे पास एक पेन है जो पिताजी ने दिया था।

(iv) तुम ऐसे बोलो जैसे मैं बता रहा हूँ।

(v) वह इसलिए आयी थी ताकि मुझे बेवकूफ बना सके।

उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित अंश 'प्रधान वाक्य' जबकि शेष भाग 'गौण वाक्य' हैं।

पहचान—प्राय: मिश्र वाक्य 'कि', 'जो-वह'—'वही-जिस', 'क्योंकि', जिससे, अर्थात्, ज्यों ही, जब, जैसा, जिस तरह, जैसे, जहाँ, जिधर जिस जगह, जितना, जैसे—जैसे, ताकि, यद्यपि, यदि आदि व्यधिकरण समुच्चयबोधकों से जुड़े रहते हैं।

आश्रित उपवाक्य के भेद—मिश्र वाक्य में प्रयुक्त होने वाले गौण उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(क) संज्ञा उपवाक्य—जो उपवाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा पदबंध के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है, उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। जैसे—राम ने कहा कि हम लड़ाई नहीं चाहते।

टिप्पणी—'राम ने कहा' उपवाक्य के कर्म के रूप में 'हम लड़ाई नहीं चाहते' उपवाक्य प्रयुक्त हुआ है। अत: यह संज्ञा उपवाक्य है।

(ख) विशेषण उपवाक्य—जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं।

जैसे—**(i)** यह वही आदमी है जिसने तुम्हें मारा था।

(ii) यह वही छात्र है जो मुझसे पढ़ा था।

टिप्पणी—यहाँ 'जिसने तुम्हें मारा था' तथा 'जो मुझसे पढ़ा था' उपवाक्य क्रमश: आदमी तथा छात्र की विशेषता बता रहा है। विशेषण उपवाक्य का प्रारम्भ जो, जिसने, जहाँ, जिससे, जिनको, जिनके लिए आदि शब्दों से होता है।

(ग) क्रिया विशेषण उपवाक्य—जिस आश्रित उपवाक्य से प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता पता चलती है, उसे क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहते हैं।

जैसे—**(i)** जब तुम मुझसे मिले थे, तब मैं छोटा था।

(ii) यदि वर्षा अच्छी होगी, तो फसल अच्छी होगी।

टिप्पणी—रेखांकित उपवाक्य क्रमश: 'था' तथा 'होगी' उपवाक्यों में क्रमश: क्रिया होने के समय तथा क्रिया के संपन्न होने की संभावना (शर्त) संबंधी विशेषता बताई गई हैं। अत: ये क्रिया विशेषण उपवाक्य हैं।

रचनान्तरण

एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में बदलना वाक्य रचनान्तरण अथवा रूपान्तरण कहलाता है। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि वाक्य रचना बदलनी चाहिए, किंतु अर्थ नहीं बदलना चाहिए।

रचनान्तरण करते समय वाक्य के तीनों भेदों-सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र वाक्य को ध्यान में रखना होता है। संयुक्त वाक्य बनाने के लिए दो स्वतंत्र वाक्यों को किन्तु, परन्तु, अथवा, लेकिन, इसलिए, और, तथा, एवं, पर आदि समुच्चयबोधक अव्ययों के प्रयोग से जोड़ा जाता है। मिश्रित वाक्य बनाने के लिए एक प्रधान वाक्य के साथ आश्रित उपवाक्यों को जोड़ा जाता है। इसके लिए कि, क्योंकि जो, जैसे, जहाँ, जब और जिसने आदि योजकों का प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार के रचनांतरण में समापिका क्रिया को असमापिका क्रिया में तथा असमापिका क्रिया को समापिका क्रिया में बदला जाता है, उदाहरणार्थ—

1. सरल वाक्य से संयुक्त तथा मिश्र वाक्य में परिवर्तन—

(क) हम लोग तैरने के लिए नदी पर गए थे। (सरल वाक्य)

(ख) हम लोगों को तैरना था इसलिए नदी पर गए थे। (संयुक्त वाक्य)

(ग) क्योंकि हमें तैरना था इसलिए हम लोग नदी पर गए थे। (मिश्र वाक्य)

2. मिश्र वाक्य से सरल तथा संयुक्त वाक्य में परिवर्तन—

(क) जैसे ही हम घर से बाहर निकले बारिश होने लगी। (मिश्र वाक्य)

(ख) हमारे घर से बाहर निकलते ही बारिश होने लगी। (सरल वाक्य)

(ग) हम घर से बाहर निकले और बारिश होने लगी। (संयुक्त वाक्य)

3. संयुक्त वाक्य से सरल तथा मिश्र वाक्य में परिवर्तन–

(क) लालाजी ने थैला उठाया और दुकान की ओर चले गए। (संयुक्त वाक्य)

(ख) लालाजी थैला उठाकर दुकान की ओर चले गए। (सरल वाक्य)

(ग) जैसे ही लालाजी ने थैला उठाया, वैसे ही वह दुकान की ओर चले गए। (मिश्र वाक्य)

इस तरह के रचनांतरणों में थोड़ी सावधानी की आवश्यकता होती है। विशेष रूप से सरल वाक्यों से संयुक्त तथा मिश्र वाक्य बनाते समय कुछ शब्द या संबंधबोधक अव्यय अथवा योजक आदि को अपनी ओर से जोड़ना पड़ता है। इसी तरह संयुक्त तथा मिश्र वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलते समय योजक शब्दों या संबंधबोधक अव्यय आदि शब्दों का लोप करना पड़ता है।

❑❑

अध्याय – 4 वाच्य

स्मरणीय बिंदु

सामान्य सुझाव

- वाच्य की परिभाषा, भेद एवं परिवर्तन के नियमों को ध्यानपूर्वक समझ लेना चाहिए।
- वाच्य परिवर्तन के प्रश्नों को हल करने हेतु निरंतर अभ्यास की आवश्यकता होती है। जितने अधिक वाक्यों का अभ्यास करेंगे उतना ही अधिक विश्वास से प्रश्न हल कर सकेंगे।
- वर्तनीगत अशुद्धियों का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता है।
- निर्देशों को सावधानीपूर्वक पालन करें।
- पूछे गए प्रश्न का ही उत्तर दें।

वाच्य और उसके भेद

परिभाषा—क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि क्रिया का विधायक (करने वाला) कर्ता है, कर्म है या भाव है, वह वाच्य कहलाता है। जैसे–

- वह पत्र लिखता है। (कर्तृवाच्य)
- पत्र उसके द्वारा लिखा जाता है। (कर्मवाच्य)
- बच्चों से / के द्वारा दौड़ा जाता है। (भाववाच्य)

वाच्य के भेद—वाच्य के दो भेद होते हैं–

(1) कर्तृवाच्य

(2) अकर्तृवाच्य

(1) कर्तृवाच्य—जिस वाक्य में क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार परिवर्तित होता है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। इसमें कर्ता प्रधान होता है।

जैसे–**(i)** राधा नाचती है।

(ii) लड़का रो रहा है।

(2) अकर्तृवाच्य—जिन वाक्यों में कर्ता प्रमुख नहीं होता है, उसे अकर्तृवाच्य कहते हैं।

अकर्तृवाच्य के दो भेद हैं-

(i) कर्मवाच्य—जिस वाक्य में क्रिया का व्यापार कर्म के साथ हो, वहाँ कर्म वाच्य होता है। कर्म की प्रधानता के कारण क्रिया का लिंग, वचन एवं पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं। कर्ता का लोप हो जाता है या कर्ता के बाद 'से' अथवा 'के द्वारा' का प्रयोग होता है।

जैसे– **(i)** राम द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

(ii) राजा द्वारा न्याय किया गया।

(iii) रमा से / रमा द्वारा पत्र लिखा जाता है।

(ii) भाववाच्य—जिस वाक्य में कर्ता या कर्म की प्रधानता न होकर भाव की प्रधानता हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। ऐसे वाक्यों में क्रिया सदा एकवचन, पुल्लिंग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है।

जैसे– **(i)** बच्चों से पढ़ा जाएगा।

(ii) मुझसे शोर में सोया नहीं जाएगा।

वाच्य परिवर्तन

कर्तृवाच्य का कर्मवाच्य में परिवर्तन–

(1) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय कर्त्ता के साथ 'से' तथा 'के द्वारा' शब्द लगाए जाते हैं। जैसे–

	कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
(i)	मोहन पत्र लिखता है।	मोहन द्वारा पत्र लिखा जाता है।
(ii)	माँ ने कपड़े धोए।	माँ द्वारा कपड़े धोए गए।

(2) कर्म के साथ लगी विभक्ति को हटा दिया जाता है। जैसे–

(i)	माला ने गुड़िया को फेंक दिया।	माला द्वारा गुड़िया फेंक दी गई।
(ii)	कमलेश ने घर को साफ किया।	कमलेश द्वारा घर साफ किया गया।

(3) कर्तृवाच्य की क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया में बदल दिया जाता है और उसके काल को कर्म के वचनानुसार बदला जाता है। जैसे–

(i)	मोहन पत्र लिखता है।	मोहन से पत्र लिखा जाता है **अथवा** मोहन द्वारा पत्र लिखा जाता है।
(ii)	माला ने गुड़िया को फेंक दिया।	माला द्वारा गुड़िया को फेंक दिया गया।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य में परिवर्तन–

(1) कर्त्ता के बाद 'से' अथवा 'द्वारा' लगा दिया जाता है। जैसे–

(i)	छात्र पढ़ेंगे।	छात्रों से पढ़ा जाएगा **या** छात्रों द्वारा पढ़ा जाएगा।
(ii)	पक्षी आकाश में उड़ते हैं।	पक्षियों से आकाश में उड़ा जाता है **या** पक्षियों द्वारा आकाश में उड़ा जाता है।

(2) मुख्य क्रिया में सामान्य भूतकाल की क्रिया को एकवचन में बदलकर 'जाना' धातु के एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष रूप को लगा देते हैं। जैसे–

(i)	छात्र पढ़ेंगे।	छात्रों से पढ़ा जाएगा **या** छात्रों द्वारा पढ़ा जाएगा।
(ii)	पक्षी आकाश में उड़ते हैं।	पक्षियों से आकाश में उड़ा जाता है।

कर्मवाच्य का प्रयोग—कर्मवाक्य का प्रयोग निम्न स्थानों या रूपों में भी होता है–

1. जब निश्चित रूप से कर्ता कौन है, यह न पता हो या भयवश या संकोचवश न बताना चाहते हों। जैसे–
पत्र लिखा जा चुका है।
उसकी चाबी चुरा ली गई है।

2. जब कोई कार्य स्वयं किया हो, किन्तु बिना आपकी इच्छा के हुआ हो। जैसे–माला खिंची और टूट गई।

3. जब कर्ता व्यक्ति न होकर व्यवस्था हो, जैसे–
सरकार द्वारा इस दिशा में उचित कदम उठा लिए गए हैं।

4. सूचना, विज्ञप्ति आदि में जहाँ कर्ता निश्चित न हो, जैसे–
चौराहे पर इकट्ठा होने पर सजा दी जाएगी।

5. अधिकार या अहंकार दिखाने के लिए, जैसे–
दोषी को कोड़े मारे जाएँ।

6. कानूनी या कार्यालयी भाषा में, जैसे–
आपका ऋण स्वीकृत किया जाता है।

7. असमर्थता जताने के लिए, जैसे–

मुझसे यह भारी पत्थर नहीं उठाया जाएगा।

भाववाच्य का प्रयोग–

1. असमर्थता या विवशता बताने के लिए, जैसे–

अब नहीं खाया जाता।

2. जब 'नहीं' का प्रयोग न हो, तो मूल कर्ता जन साधारण हो, जैसे–

वर्षा में छाते का प्रयोग किया जाता है।

❑❑

अध्याय – 5 पद–परिचय

स्मरणीय बिंदु

सामान्य सुझाव

- विकारी पदों तथा अविकारी पदों के भेद, लिंग, कारक, वचन, पुरुष, काल, वाच्य आदि को ध्यानपूर्वक समझना चाहिए।
- सावधानी पूर्वक निर्देशित पदों का ही पद-परिचय दें।
- व्याकरणिक तथा वर्तनीगत अशुद्धियों पर अंक काटे जा सकते हैं अतः त्रुटियों से बचने का प्रयास करें।
- पद-परिचय देते समय सही विकल्प का चुनाव करें।

पद—शब्द जब तक कोश में रहता है, शब्द कहलाता है परन्तु वाक्य में प्रयोग करने पर जब यह व्याकरणिक नियमों से आबद्ध हो जाता है, तब उसे पद कहते हैं।

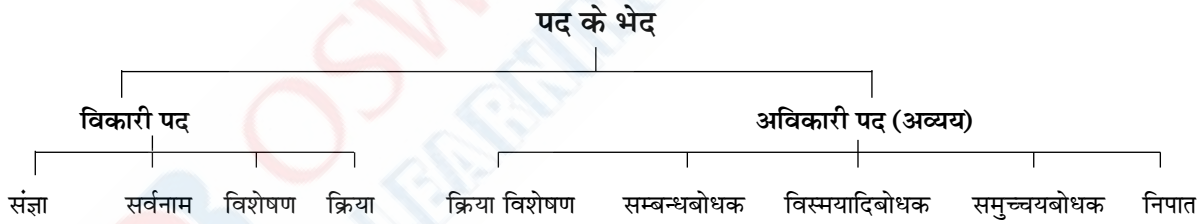

वाक्यों में आने वाले पदों का व्याकरणिक दृष्टि से परिचय देना पद-परिचय कहलाता है।

पद का नाम	परिचय देने के लिए आवश्यक बातें
1. विकारी **(i)** संज्ञा	संज्ञा के भेद (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक), वचन (एकवचन, बहुवचन), लिंग (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग) कारक (कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन) क्रिया के साथ सम्बन्ध।
(ii) सर्वनाम	सर्वनाम के भेद (पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, निजवाचक, सम्बन्धवाचक), पुरुष (उत्तम, मध्यम, अन्य), लिंग, वचन, क्रिया के साथ सम्बन्ध।
(iii) विशेषण	विशेषण के भेद (गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, सार्वनामिक), लिंग, वचन, विशेष्य।
(iv) क्रिया	क्रिया के भेद (अकर्मक, सकर्मक), लिंग, वचन, पुरुष, काल (भूत, वर्तमान, भविष्यत्), वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य) कर्ता, कर्म का संकेत।
2. अविकारी अव्यय	क्रिया विशेषण के भेद (कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक, परिमाणवाचक) जिस क्रिया की विशेषता बता रहा हो उसका संकेत, समुच्चयबोधक, सम्बन्धबोधक, विस्मयादिबोधक, निपात, उनका सम्बन्ध।

उदाहरणार्थ—

1. **संज्ञा पद-परिचय**

   राधा कक्षा में बैठी है।

   राधा—संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'बैठी है' क्रिया की कर्ता।

   कक्षा—संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'बैठी है' क्रिया से सम्बद्ध।

2. **सर्वनाम पद-परिचय**

   मैं खाना खाकर पढ़ूँगा।

   मैं—सर्वनाम, उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'पढ़ूँगा', क्रिया का कर्ता।

3. **विशेषण पद-परिचय**

   नीली चुनरी धूप में सूख रही थी।

   नीली—विशेषण, गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'चुनरी' संज्ञा की विशेषता बता रहा है।

4. **क्रिया पद-परिचय**

   लड़कियाँ बातें **कर रही हैं।**

   कर रही हैं—क्रिया, अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्तृवाच्य, लड़कियाँ कर्ता की क्रिया।

5. **क्रिया-विशेषण पद-परिचय**

   आकांक्षा **धीरे-धीरे** चल रही थी।

   धीरे-धीरे—क्रिया विशेषण, रीतिवाचक, 'चल रही' क्रिया की रीति की विशेषता।

6. **सम्बन्धबोधक पद-परिचय**—भावना **के बदले** सुमन दिल्ली चली गई।

   के बदले—सम्बन्धबोधक, विनिमय वाचक, भावना और सुमन में सम्बन्ध सूचक।

7. **समुच्चयबोधक पद-परिचय**—साधना बीमार थी **इसलिए** विद्यालय नहीं आई।

   इसलिए—समुच्चयबोधक, परिणामदर्शक समानाधिकरण, साधना बीमार थी और विद्यालय नहीं आई उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य, परिणाम स्पष्ट करना।

8. **विस्मयादिबोधक पद-परिचय—**

   वाह ! क्या दृश्य है।

   वाह—विस्मयादिबोधक, प्रसन्नतासूचक, दृश्य का प्रशंसा सूचक पद।

❑❑

अध्याय — 6 रस

स्मरणीय बिंदु

सामान्य सुझाव

- सभी रसों के स्थायी भावों को अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए जिससे सही विकल्प का चयन हो सके।
- रसों में उदाहरणों का अत्यधिक महत्व है अत: प्रत्येक रस से संबंधित उदाहरण याद होने चाहिए।
- पूछे गए प्रश्न के उत्तरों में से सही विकल्प का चयन करने का प्रयास कीजिए।

'जिसका आस्वादन किया जाए वही 'रस' है।' काव्य को पढ़ने, सुनने पर जिस आनन्द की प्राप्ति होती है उसे 'रस' कहते हैं। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में रस के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए रस की निष्पत्ति के सम्बन्ध में लिखा है : **विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रस निष्पत्ति** अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

रस के अंग

रस के प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं–

(क) स्थायी भाव **(ख)** विभाव **(ग)** अनुभाव **(घ)** संचारी या व्यभिचारी भाव।

(क) स्थायी भाव—स्थायी भाव प्रत्येक मनुष्य के मन में स्थायी रूप से विद्यमान होते हैं और अनुकूल परिस्थितियाँ मिलने पर जाग्रत होते हैं। प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव होता है।

	स्थायी भाव	**रस**
1.	रति	श्रृंगार
2.	शोक	करुण
3.	उत्साह	वीर
4.	हास	हास्य
5.	क्रोध	रौद्र
6.	भय	भयानक
7.	आश्चर्य	अद्‌भुत
8.	जुगुप्सा	वीभत्स
9.	निर्वेद	शान्त [रसों की संख्या नौ ही मानी गयी है।]
10.	वत्सलता अथवा वात्सल्य रति	वात्सल्य (संतान विषयक रति)
11.	भगवद् विषयक रति	भक्ति (भगवद् विषयक रति)

1. **रति**—प्रेमी-प्रेमिका का एक-दूसरे के प्रति उत्पन्न प्रेम 'रति' कहलाता है।
2. **शोक**—किसी प्रिय वस्तु के नष्ट होने पर होने वाली व्याकुलता 'शोक' कहलाती है।
3. **उत्साह**—वह वृत्ति जो मनुष्य को किसी कार्य को तेजी से और शौर्यपूर्ण तरीके से करने के लिए प्रेरित करती है 'उत्साह' कहलाती है।
4. **हास**—रूप, वाणी, अंगों की विचित्रता या असमानता देखकर चित्त का प्रसन्नचित्त होना 'हास' कहलाता है।
5. **क्रोध**—किसी अपराध, अपमान, विवाद आदि से उत्पन्न विकार 'क्रोध' कहलाता है।
6. **भय**—हिंसक जीव-जन्तु, अपराध, भयंकर शब्द या रौद्र रूप देखकर मन में जो व्याकुलता होती है, उसे भय कहते हैं।
7. **आश्चर्य**—किसी अलौकिक वस्तु को देखने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'आश्चर्य' कहते हैं।
8. **जुगुप्सा**—किसी अरुचिकर या घृणित वस्तु देखने पर जो भाव उत्पन्न होते हैं, उसे 'जुगुप्सा' कहते हैं।
9. **निर्वेद**—सांसारिक वस्तुओं के प्रति वैराग्य की उत्पत्ति के भाव को 'निर्वेद' कहते हैं।
10. **वत्सलता**—माता-पिता का संतान के प्रति सात्विक प्रेम 'वात्सल्य' कहलाता है।
11. **भगवद्-विषयक रति**—ईश्वर के प्रति अनुरक्ति के भाव को 'भगवद् विषयक रति' कहते हैं।

(ख) विभाव—जो व्यक्ति या पदार्थ दूसरे व्यक्ति के मन में स्थायी भाव को जाग्रत या उद्दीप्त करते हैं, उन्हें 'विभाव' कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं–

(i) आलम्बन विभाव—जिसे देखकर मन में भाव जाग्रत होते हैं, उन्हें 'आलम्बन विभाव' कहते हैं। जिस व्यक्ति के मन में स्थायी भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आश्रय कहते हैं।

(ii) उद्दीपन विभाव—स्थायी भाव को उद्दीप्त करने वाला कारण 'उद्दीपन विभाव' कहलाता है।

(ग) अनुभाव—रस की उत्पत्ति को पुष्ट करने के वे भाव जो विभाव के बाद उत्पन्न होते हैं, उन्हें 'अनुभाव' कहते हैं।

(घ) संचारी भाव—जो भाव स्थायी भाव को अधिक पुष्ट करते हैं, उन हाव-भावों को संचारी भाव कहते हैं। इनकी संख्या 33 होती हैं, जो इस प्रकार है–

1. निर्वेद	**2.** आवेग	**3.** दैन्य	**4.** श्रम	**5.** मद	**6.** जड़ता
7. उग्रता	**8.** मोह	**9.** विबोध	**10.** स्वप्न	**11.** अपस्मार	**12.** गर्व
13. मरण	**14.** आलस्य	**15.** अमर्ष	**16.** निद्रा	**17.** अविहित्था	**18.** उत्सुकता/औत्सुक्य
19. उन्माद	**20.** शंका	**21.** स्मृति	**22.** मति	**23.** व्याधि	**24.** संत्रास

25. लज्जा **26.** हर्ष **27.** असूया **28.** विषाद **29.** धृति **30.** चपलता/चापल्य
31. ग्लानि **32.** चिन्ता **33.** वितर्क।

रसों के प्रकार

व्याकरणाचार्य रसों की संख्या मूलत: 9 मानते हैं, परन्तु बाद में भक्ति व वात्सल्य को सम्मिलित किए जाने पर इनकी संख्या 11 हो गई है।

(1) शृंगार रस—नायक-नायिका के मध्य रति या प्रेम जो रस उत्पन्न करता है, उसे शृंगार रस कहते हैं।

स्थायी भाव—रति

आलम्बन विभाव—नायक या नायिका।

उद्दीपन विभाव—आलंबन का सौन्दर्य, प्रकृति, रमणीयता, वसन्त ऋतु आदि।

अनुभाव—अवलोकन, स्पर्श, आलिंगन, चुंबन, कटाक्ष, अश्रु आदि।

संचारी भाव—हर्ष, जड़ता, अभिलाषा, चंचलता, आशा, स्मृति, रुदन, आवेग, उन्माद आदि।

शृंगार के भेद—शृंगार रस के दो भेद हैं; संयोग शृंगार तथा वियोग शृंगार।

(i) संयोग शृंगार—इसमें नायक-नायिका का पारस्परिक मिलन होता है।

उदाहरण— "कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सौं बात।"

(ii) वियोग शृंगार—जब नायक-नायिका मिलन के अभाव में दु:खी हों तो, उसे वियोग शृंगार कहते हैं। यथा—सीता का हरण हो जाने के बाद राम का वियोग निम्न पंक्तियों से व्यक्त होता है—

उदाहरण— "हे खग मृग! हे मधुकर सैनी।
तुम देखी सीता मृगनयनी!"

(2) करुण रस—जब किसी प्रिय वस्तु के नाश से या अनिष्ट की आशंका से दु:ख अथवा क्षोभ उत्पन्न होता है, तो उससे 'करुण रस' की उत्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—शोक।

आलंबन विभाव—धन, ऐश्वर्य, प्रिय वस्तु का नष्ट होना आदि।

उद्दीपन विभाव—आलंबन का दाह-कर्म, इष्ट के गुण, उससे सम्बन्धित क्रिया।

अनुभाव—भूमि पर गिरना, छाती पीटना, रुदन, प्रलाप, मूर्च्छा, कंपन आदि।

संचारी भाव—निर्वेद, मोह, अपस्मार, व्याधि, ग्लानि, स्मृति, श्रम, विषाद, जड़ता, दैन्यता।

उदाहरण— "अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी न थे लाज के बोल, खिले थे चुम्बन शून्य कपोल,
हाय! रुक गया यहीं संसार, बना सिंदूर अंगार
वातहत लतिका वह सुकुमार पड़ी है छिन्नाधार!''

(3) हास्य रस—किसी व्यक्ति अथवा किसी पदार्थ का अनोखा विकृत रूप, किसी विशेष प्रकार की वेशभूषा, वाणी, चेष्टा आदि देखकर उत्पन्न हुए विनोद या हास्य के भाव से 'हास्य रस' की निष्पत्ति होती हं।

स्थायी भाव—हास।

आलंबन विभाव—विकृत वेशभूषा, विचित्र सा हाव-भाव, हास्य जनक चेष्टाएँ।

उद्दीपन विभाव—आलंबन की अनोखी आकृति, वाणी, चेष्टाएँ आदि।

अनुभाव—आश्रय की मुस्कान, नेत्रों का मिचमिचाना, अट्टहास।

संचारी भाव—हर्ष, आलस्य, निद्रा, चपलता, उत्सुकता आदि।

उदाहरण— विन्ध्य के वासी, उदासी, तपो ब्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे।
गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनिबृन्द सुखारे॥
ह्वै हैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायक जू! करुना करि कानन को पगु धारे॥

(4) रौद्र रस—जब दूसरे पक्ष द्वारा किए गए अपमान या गुरुजन आदि की निन्दा से क्रोध का भाव उत्पन्न होता है, तो इससे 'रौद्र रस' उत्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—क्रोध।

आलंबन विभाव—विपक्षी, शत्रु, अशिष्ट व्यक्ति।

उद्दीपन विभाव—विपक्षी शत्रु अथवा अशिष्ट व्यक्तियों के वाक्य अथवा कार्य।

अनुभाव—नेत्रों का लाल होना, भौंहें टेढ़ी होना, दाँत पीसना, होंठ चबाना, कठोर दृष्टि से देखना, भुजाओं को चलाना, गर्जन-तर्जन, शस्त्र उठाना आदि।

संचारी भाव—अमर्ष, मोह, मद, उग्रता, स्मृति, आवेश, चपलता आदि।

उदाहरण— "भाखै लखन कुटिल भई भौंहें।
रद-पट फरकत नयन रिसौंहें॥"

(5) वीर रस—युद्ध या दुष्कर कार्य को करने के लिए हृदय में जो उत्साह जाग्रत होता है, उसमें वीर-रस की निष्पत्ति होती है। 'वीर रस' चार प्रकार के होते हैं—(क) युद्धवीर, (ख) दानवीर, (ग) दयावीर, (घ) धर्मवीर।

(क) युद्धवीर—जो युद्ध में वीरता और उत्साह का प्रदर्शन करते हैं।

स्थायी भाव—युद्ध-उत्साह।

आलम्बन विभाव—शत्रु तथा शत्रु सेना आदि।

अनुभाव—भुजा-फड़कना, आक्रमण या प्रहार करना, गर्वोक्ति, अस्त्र-शस्त्र।

संचारी भाव—हर्ष, आवेग, उग्रता, औत्सुक्य आदि।

उदाहरण— क्रुद्ध, दशानन बीस भुजानि सो लै कपि रीछ अनी सर बट्टत।
लच्छन-तच्छन रक्त किए दृग लच्छ विपच्छन के सिर कट्टत॥

(ख) दानवीर—याचक को दान में सर्वस्व अर्पण करते हुए भी जिसके हृदय में क्षोभ नहीं वरन् आनन्द उत्पन्न हो, उसे 'दानवीर' कहते हैं।

स्थायी भाव—दान देने का उत्साह।

आलम्बन विभाव—दानपात्र की सत्पात्रता, अपने कर्त्तव्य का ज्ञान, यश और नाम की इच्छा, तीर्थ स्थान, साधु-समागम आदि।

अनुभाव—दानपात्र की इज्ज़त करना, चेहरे पर मुस्कराहट, उदारता।

संचारी भाव—हर्ष, धैर्य, स्मरण आदि।

उदाहरण— "मुठी तीसरी भरत ही, रुक्मनि पकरी बाँह।
ऐसे तुम्हें कहा भई सम्पत्ति की अनचाह॥"

(ग) दयावीर—दु:खी को देखकर दया के वशीभूत होकर उसके लिए कुछ करने का हृदय में साहस उत्पन्न होने के भाव का नाम 'दयावीर' है।

स्थायी भाव—दया करने का उत्साह।

आलम्बन विभाव—दीन, आर्त, दु:खी, दया के पात्र आदि।

उद्दीपन विभाव—पात्र की दीनता, कष्ट, आर्तनाद आदि।

अनुभाव—मधुर शब्द, आश्वासन, वाक्य आदि।

संचारी भाव—पुलक, धृति, चंचलता, उत्कंठा आदि।

उदाहरण— 'दीन-हीन सुहृदय सुदामा की अवाई सुनै।
दीन-बंधु पहलि दया सों मया पागे हैं।
आई पौरि-पौरि देखि दृगन अलेख दशा।
धीर त्यागी और हूँ विशेष दु:ख दागे हैं।"

(घ) धर्मवीर—धार्मिक कार्यों को करने के लिए उत्साहित होना तथा आनंद अनुभव करते हुए कार्य में लगना 'धर्मवीर' होना कहलाता है।

स्थायी भाव—धर्म सम्बन्धी उत्साह।

आलम्बन विभाव—धर्म ग्रन्थों के वचनों में श्रद्धा, धर्म के प्रति निष्ठा आदि।

उद्दीपन विभाव—धर्म ग्रन्थों का पाठन तथा श्रवण, गुरुजनों के उपदेश, धर्म कार्य का फल, प्रशंसा आदि।

अनुभाव—धर्म रक्षा एवं अधर्म नाश के उपाय, धर्मानुकूल आचरण आदि।

संचारी भाव—हर्ष, क्षमा, मति आदि।

उदाहरण— आजु हौं टेकधरी मनमाहिं न छाड़ियों याहि करो बहुतेरो।
धाक है है युधिष्ठिर की धन–धाम तजौं पै हो बोल न कैरो॥

(6) भयानक रस—किसी भयानक अथवा अनिष्टकारी वस्तु को देखने, उसका वर्णन सुनने से उत्पन्न भय के भाव से 'भयानक रस' की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—भय।

आलंबन विभाव—भयानक जीव–जन्तु, भयानक दृश्य, निर्जन स्थान, वन, डाकू, चोर, शत्रु आदि।

उद्दीपन विभाव—भयंकर दृश्य, हिंसक जीवों की भयानक चेष्टाएँ, भयप्रद निर्जनता आदि।

अनुभाव—पसीना आना, आवाज न निकलना, रोमांच, मूर्च्छा, पलायन, रोना–चिल्लाना, कंपन आदि।

संचारी भाव—चिंता, शोक, त्रास, ग्लानि, मरण, दैन्य, संभ्रम आदि।

उदाहरण— "एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय।
विकल बटोही बीच ही, पर्‌यो मूर्च्छा खाय॥"

(7) वीभत्स रस—घृणित वस्तुओं को देखकर या उनका वर्णन सुनकर मन में उत्पन्न होने वाली घृणा या ग्लानि के भाव से 'वीभत्स रस' की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—जुगुप्सा।

आलंबन विभाव—दुर्गंधयुक्त माँस, रक्त, अस्थि पंजर, श्मशान आदि।

उद्दीपन विभाव—रक्त, माँस आदि का सड़ना, कीड़े पड़ना, कीड़े रेंगना, गिद्ध, कौए, कुत्ते, सियार आदि द्वारा माँस नोंचना आदि।

अनुभाव—नाक–भौं सिकोड़ना, थूकना, रोमांच आदि।

संचारी भाव—मोह, अपस्मार, जड़ता, व्याधि, मरण आदि।

उदाहरण— "सिर पर बैठ्यो काग, आँख दोऊ खात निकारत।
खींचत जीभहि स्यार, अतिहि आनन्द उर धारत॥"

(8) अद्‌भुत रस—विचित्र या आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर हृदय में विस्मय आदि के जो भाव उठते हैं, उनसे 'अद्‌भुत रस' की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—विस्मय या आश्चर्य।

आलंबन विभाव—अलौकिक तथा आश्चर्यजनक वस्तु आदि।

उद्दीपन विभाव—इन वस्तुओं का दिखना अथवा इनका वर्णन सुनना आदि।

अनुभाव—मुँह खुला रह जाना, दाँतों तले उँगली दबाना, रोमांच, स्वर भंग, पसीना आना, स्तम्भित रह जाना।

संचारी भाव—हर्ष, भ्रान्ति, आवेग, वितर्क, चिन्ता, जड़ता, चंचलता आदि।

उदाहरण— "लीन्हों उखारि पहार विसाल, चल्यो तेहि काल विलंब न लायो।
मारुत नन्दन मारुत को मन को, खगराज को बेगि लजायो।।"

(9) शान्त रस—संसार की निस्सारता, तत्त्व ज्ञान, सांसारिक पदार्थों की असारता, परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होने से मन में निर्वेद या वैराग्य भाव उत्पन्न होता है, जिससे शांत रस की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—निर्वेद।

आलम्बन विभाव—संसार की असारता का ज्ञान या ईश्वर–चिंतन।

उद्दीपन विभाव—सत्संगति, धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रन्थों का पठन आदि।

अनुभाव—संसार को दु:खी देखकर कातर होना, अश्रुपात आदि।

संचारी भाव—मति, धृति, हर्ष, स्मृति, ग्लानि, उद्वेग, दैन्य, जड़ता एवं निर्वेद आदि।

उदाहरण— "जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ कामु।
मन काँचै नाचे वृथा, साँचे रांचे रामु।।"

(10) वात्सल्य रस—वस्तुतः यह रस शृंगार रस के अन्तर्गत आता है। संतान के प्रति स्नेह या वात्सल्य से 'वात्सल्य रस' की उत्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—वत्सलता तथा स्नेह।

आलम्बन विभाव—शिशु।

उद्दीपन विभाव—आलम्बन का तुतलाना, घुटनों चलना, खेलना, अन्य बाल चेष्टाएँ आदि।

अनुभाव—आलिंगन, चुम्बन, एकटक देखना।

संचारी भाव— मोह, आवेग, हर्ष आदि।

उदाहरण— 'माँ अथवा माँ ओ!' कहकर बुला रही थी, मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में, मुझे खिलाने आई थी।
मैंने पूछा यह क्या लाई, बोल उठी वह 'माँ काओ'।
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से मैंने कहा 'तुम्हीं खाओ।"

(11) भक्ति रस—ईश्वर विषयक रति भाव जब भक्त में उत्पन्न होता है तो 'भक्ति रस' की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—ईश्वर विषयक रति।

आलम्बन विभाव—ईश्वर या देवता।

उद्दीपन विभाव—ईश्वर के गुण, कृपालुता, भक्त वत्सलता, सत्संग आदि।

अनुभाव—ईश्वर का गुण-कथन, गदगद होना आदि।

संचारी भाव—हर्ष, स्मृति, पुलक, गर्व आदि।

उदाहरण— "अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोई।
अब तो बेल फैल गई आणंद फल होई॥"

❑❑

'क्षितिज' भाग-2 (अ) गद्य-खंड

अध्याय — 1 नेताजी का चश्मा *(स्वयं प्रकाश)*

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय—समकालीन कहानी में महत्त्वपूर्ण स्थान रखने वाले कहानीकार स्वयं प्रकाश का जन्म सन् 1947 में इंदौर (मध्य प्रदेश) में हुआ। उनका बचपन राजस्थान में बीता। इन्होंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की, उसके बाद औद्योगिक प्रतिष्ठान में इन्हें नौकरी मिल गई, लेकिन बाद में इन्होंने नौकरी छोड़ दी व पत्रिका (वसुधा) का संपादन करने लगे। वर्तमान में ये भोपाल (मध्य प्रदेश) में रह रहे हैं।

प्रमुख रचनाएँ—बीच में विनय, आदमी जात का आदमी, आएँगे अच्छे दिन भी, संधान, ईंधन आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

भाषा-शैली—इनकी भाषा आम बोलचाल की खड़ी बोली है जिसमें तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों के साथ-साथ आगत शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

पाठ का सारांश

स्वयं प्रकाश जी ने अपनी कहानी 'नेताजी का चश्मा' के माध्यम से देश के करोड़ों गुमनाम नागरिकों के योगदान को उजागर किया है। इस देश के निर्माण में अपने-अपने तरीके से बड़े के साथ-साथ छोटे देशभक्त भी योगदान देते हैं। उन छोटे देशभक्तों में बच्चे भी शामिल हैं।

प्रस्तुत कहानी एक छोटे से कस्बे की कहानी है। इसी कस्बे की नगरपालिका के किसी उत्साही प्रशासनिक अधिकारी ने कस्बे के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। इस कहानी का कथानक इसी प्रतिमा के इर्द-गिर्द घूमता है।

इस प्रतिमा को बनाने का कार्य तमाम राजनीतिक एवं प्रशासनिक ऊहापोह के पश्चात् कस्बे के हाईस्कूल के ड्रॉइंग मास्टर मोतीलाल जी को सौंपा गया, जिन्होंने एक महीने में मूर्ति बनाने का विश्वास दिलाया और जब मूर्ति बनकर तैयार हुई तो लगने लगा कि यह मूर्तिकार का सफल प्रयास था। नेताजी की मूर्ति दो फुट की थी और सुन्दर थी। नेताजी सुन्दर लग रहे थे कुछ–कुछ मासूम और कमसिन। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' वगैरह याद आने लगते थे। उस मूर्ति में बस एक चीज खटकती थी वह थी—नेताजी की आँखों का चश्मा। मूर्ति की आँखों पर संगमरमर का चश्मा नहीं था।

हालदार साहब कम्पनी के काम से इसी कस्बे से गुजरते थे। जब वे पहली बार इस कस्बे से गुजरे और पान खाने के लिए रुके तभी उन्होंने देखा कि मूर्ति पत्थर की थी, लेकिन उस पर चश्मा रियल था। हालदार साहब को कस्बे के नागरिकों की देशभक्ति की भावना का यह प्रयास अच्छा लगा, वरना देशभक्ति तो आजकल मज़ाक की चीज़ होती जा रही है। हालदार साहब जब भी कस्बे से गुजरते, चौराहे पर रुकते, पान खाते और मूर्ति को ध्यान से देखते। उन्हें हर बार मूर्ति का चश्मा बदला हुआ मिलता, कभी गोल फ्रेम वाला, कभी मोटे फ्रेम वाला, कभी चौकोर चश्मा आदि। जब हालदार साहब से न रहा गया तो उन्होंने पान वाले से चश्मे के बदलने का कारण पूछ ही लिया। पानवाले ने अपनी बत्तीसी दिखाकर कहा कि कैप्टन चश्मेवाला, चश्मा चेंज कर देता है।

हालदार साहब को समझ में आ गया कि एक कैप्टन नाम का चश्मेवाला है जिसे बगैर चश्मे के नेताजी की मूर्ति अच्छी नहीं लगती इसलिए वह अपनी छोटी–सी दुकान के गिने–चुने चश्मों में से कोई एक नेताजी की मूर्ति पर लगा देता है, लेकिन जब कोई ग्राहक आता है और उससे वैसे ही फ्रेम की माँग करता है तो वह मूर्ति पर लगा फ्रेम ग्राहक को दे देता है और नेताजी से माफी माँगते हुए उन्हें दूसरा फ्रेम पहना देता है।

हालदार साहब को यह सब बड़ा विचित्र लग रहा था। एक दिन उन्होंने पानवाले से जाकर पूछा, क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आजाद हिंद फौज़ का भूतपूर्व सिपाही। पानवाले ने व्यंग्य से मुस्कराकर कहा–वो लँगड़ा क्या जायेगा फौज में, पागल है पागल! वो देखो आ रहा है। हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मजाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने देखा एक बूढ़ा मरियल–सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में छोटी सी संदूकची और दूसरे हाथ में बाँस पर टँगे बहुत–से चश्मे लिए एक गली से निकल रहा था और एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। यही था कैप्टन चश्मेवाला जो फेरी लगाता था।

हालदार साहब दो साल तक अपने काम के सिलसिले में उसी कस्बे से गुजरते रहे और नेताजी की मूर्ति पर बदलते हुए चश्मे को देखते रहे। एक बार हालदार साहब ने देखा कि मूर्ति पर कोई भी चश्मा नहीं है, पानवाले से पूछने पर पता चला कि कैप्टन मर गया है। हालदार साहब उदास हो गए और सोचने लगे कि उस पीढ़ी का क्या होगा जो अपने देश के लिए सर्वस्व लुटाने वालों पर हँसती है और अपने लिए बिकने का मौका ढूँढ़ती है।

पन्द्रह दिन पश्चात् हालदार साहब पुनः उसी कस्बे से गुजरे, सोचा कि प्रतिमा के पास नहीं रुकेंगे और पान भी आगे ही खा लेंगे, पर आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ उठ गईं। गाड़ी से उतर कर तेज–तेज कदमों से मूर्ति की तरफ आगे बढ़े और उसके सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए। उन्होंने देखा मूर्ति पर सरकंडे से बना चश्मा लगा हुआ था, जिसे शायद बच्चों ने बनाकर मूर्ति को पहना दिया था। इतनी–सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।

शब्दार्थ

सिलसिला—क्रम; **प्रतिमा**—मूर्ति; **लागत**—खर्चा; **उपलब्ध बजट**—खर्च करने के लिए प्राप्त धन; **ऊहापोह**—क्या करें क्या न करें इसका निर्णय न कर पाना; **स्थानीय**—उसी क्षेत्र में रहने वाला; **कसर**—कमी; **खटकना**—अखरना; **पटक देना**—जल्दी–जल्दी बनाकर देना; **बस्ट**—मुख एवं छाती के ऊपरी भाग की बनाई गई आकृति; **कमसिन**—कम उम्र; **कौतुकभरी**—विस्मय या आश्चर्ययुक्त; **रियल**—वास्तविक; **निष्कर्ष**—सार; **दरकार**—आवश्यकता; **आइडिया**—विचार; **सराहनीय**—प्रशंसनीय; **लक्षित किया**—देखा; **दुर्दमनीय**—जिसका दमन करना कठिन हो; **गुजरना**—जाना; **ठूँसा**—भरा हुआ; **गिराक**—खरीददार या ग्राहक; **प्रफुल्लता**—खुशी; **कौम**—जाति; **होम कर देना**—कुर्बान हो जाना; **ओरिजनल**—असली, वास्तविक; **द्रवित**—पिघला हुआ; **पारदर्शी**—जिसके आर–पार देखा जा सके; **अवाक् रह जाना**—आश्चर्यचकित रह जाना; **मरियल**—अत्यंत कमजोर शरीर वाला; **हृदयस्थली**—वक्ष–स्थल **अटेंशन**—सावधान; **भावुक**—भावनाओं के वशीभूत होने वाला।

❑❑

अध्याय — 2 बाल गोबिन भगत *(— रामवृक्ष बेनीपुरी)*

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय- रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुजफ्फरनगर जिले के बेनीपुर गाँव में सन् 1899 में हुआ। बचपन में ही माता-पिता का साया इनके ऊपर से उठ गया। अत: आरम्भिक जीवन बहुत संघर्षों से भरा रहा। मैट्रिक तक की पढ़ाई कर वे स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने लगे। सन् 1968 में उनका देहांत हो गया।

प्रमुख रचनाएँ—'पतितों के देश में', 'चिता के फूल', 'माटी की मूरतें', 'जंजीरें और दीवारें', अंबपाली आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। उनका पूरा साहित्य बेनीपुरी रचनावली के आठ खंडों में प्रकाशित है।

भाषा-शैली—बेनीपुरी जी की भाषा में तत्सम, तद्भव, उर्दू भाषाओं के साथ सामान्य बोलचाल के आंचलिक शब्दों का प्रयोग भी यथास्थान देखने को मिलता है। इसकी भाषा सरल व सहज है।

पाठ का सारांश

'बालगोबिन भगत' का बाहरी व्यक्तित्त्व सामान्य कबीर पंथियों जैसा था। उनका चेहरा सफेद बालों से जगमग बना रहता। कपड़े कम पहनते थे। कमर में एक लँगोटी-मात्र और सिर पर कबीर पंथियों जैसी एक टोपी तथा ठंड के दिनों में काली कमली ऊपर से ओढ़ लेते। मस्तक पर चंदन और गले में तुलसी की माला पहने रहते।

'बालगोबिन भगत' गृहस्थ होकर भी साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले थे। वे कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते तथा कबीर द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते। लेखक को 'बालगोबिन भगत' के मधुर संगीत ने भी बहुत प्रभावित किया। कबीर के सीधे-सादे पद उनके कंठ से निकलकर सजीव हो जाते थे।

आषाढ़ की रिमझिम पड़ते ही समूचा गाँव खेत में उतर पड़ता। 'बालगोबिन भगत' भी अपने खेत में रोपनी करने के लिए उतर पड़ते और उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को स्वर्ग की ओर भेजता है और कुछ को पृथ्वी पर खड़े लोगों के कानों की ओर! भादों की अँधेरी रात में भी दादुरों की टर्र-टर्र या झिल्ली की झंकार 'बालगोबिन भगत' के संगीत को अपने कोलाहल में डुबो नहीं पाती। कार्तिक मास के आते ही बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरू हो जातीं और फाल्गुन तक चलतीं। गर्मियों में उनकी 'संझा' उमस भरी शाम को शीतल करती। जब वे घर के आँगन में आसन जमाकर बैठ जाते तो गाँव के कुछ प्रेमी भी जुट जाते। एक पद 'बालगोबिन भगत' कहते जाते, उनकी प्रेमी मंडली उसे दुहराती, तिहराती। धीरे-धीरे मन-तन पर हावी हो जाता है और एक क्षण ऐसा आता कि 'बालगोबिन भगत' खँजड़ी लिए बीच में नाच रहे होते और उसके साथ ही सबके तन और मन नृत्यशील हो उठते।

'बालगोबिन भगत' की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा! वह उनका इकलौता बेटा था। 'बालगोबिन भगत' उसका अधिक ध्यान रखते थे, क्योंकि वह सुस्त और कमजोर था। उनका मानना था कि ऐसे लोग निगरानी और मुहब्बत के ज्यादा हक़दार होते हैं। उन्होंने अपने पुत्र का बड़ी सादगी के साथ विवाह किया था। पतोहू बड़ी ही सुशील मिली थी। उसने पूरे घर को सँभाल लिया था। 'बालगोबिन भगत' के बेटे की मृत्यु का समाचार जब लेखक को मिला तो कौतूहलवश उनके घर गया और यह देखकर दंग रह गया कि बेटे का शव सफेद कपड़े से ढका हुआ आँगन में रखा हुआ था। वो जमीन पर आसन लगाए गीत गाए जा रहे थे वही पुराना स्वर। पतोहू रो रही थी, जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही थीं। वे पतोहू से रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते—विरहिणी आत्मा अपने प्रेमी परमात्मा से जा मिली। इस कथन में उनका चरम विश्वास बोल रहा था।

'बालगोबिन भगत' ने पुत्र के शव को पतोहू से ही आग दिलाई। श्राद्ध की अवधि पूरी होते ही पतोहू को उसके भाई के साथ भेज दिया और कहा कि इसका दूसरा विवाह कर देना—पतोहू जाना नहीं चाहती थी—वह कहती कि बुढ़ापे में उनकी देखभाल कौन करेगा, पर उनके अटल निर्णय के आगे उसकी एक न चली।

बालगोबिन भगत की अंतिम विदाई भी उन्हीं के अनुरूप हुई। वे हर वर्ष गंगा स्नान के लिए जाते, करीब तीस कोस पर गंगा थी। जाने-आने में तीन-चार दिन लगते थे। इन दिनों वे उपवास रखते। इतने लंबे उपवास में भी वही मस्ती, अब बुढ़ापे में भी वही जवानी वाली टेक।

किंतु इस बार लौटे तो तबियत कुछ खराब थी। खाने-पीने के बाद भी तबियत नहीं सुधरी, लेकिन उन्होंने अपना नियम-व्रत नहीं छोड़ा।

दोनों वक्त गाना, स्नान–ध्यान, खेतीबाड़ी की देखभाल; वे दिन–दिन क्षीण होते गए। आराम करने को कहते तो हँसकर टाल देते। उस दिन भी संध्या में गीत गाया, पर ऐसा लगा जैसे तार टूट गया हो और माला का एक–एक मोती बिखर गया हो। भोर में लोगों ने गीत की मधुर आवाज नहीं सुनी। जाकर देखा तो बालगोबिन भगत नहीं रहे, सिर्फ उनका शरीर पड़ा था।

शब्दार्थ

पुरवाई—पूर्व दिशा की ओर से चलने वाली हवा; **लिथड़े**—मिट्टी से सने हुए; **हलवाहा**—हल हाँकने वाला किसान; **अधरतिया**—आधी रात; **मूसलाधार वर्षा**—जोर की वर्षा; **दादुर**—मेढक; **कोलाहल**—शोर; **खंजड़ी**—ढपली के ढंग का परंतु आकार में उससे छोटा वाद्ययंत्र; **निस्तब्धता**—शांति, सन्नाटा; **प्रभाती**—प्रात:काल में गाए जाने वाले गीत; **मँझोला**—न बहुत बड़ा न बहुत छोटा, बीच का; **गोरे-चिट्टे**—गौर वर्ण के; **जटाजूट**—लंबे बालों का झुंड; **कबीरपंथी**—कबीर के पंथ को मानने वाले, कबीर–पंथ में विश्वास रखने वाले; **कमली**—कंबल; **रामानंदी**—रामानंद के द्वारा अपनाया गया; **गृहिणी**—पत्नी; **पतोहू**—पुत्रवधू; **खरा उतरना**—सफल सिद्ध होना; **खरा व्यवहार रखना**—स्पष्ट व्यवहार रखना; **दो टूक कहना**—स्पष्ट कहना; **संकोच करना**—झिझकना; **खामखाह**—बेकार में; **कुतूहल**—जानने की इच्छा रखना; **साहब**—ईश्वर; **दरबार**—देवालय; **मुग्ध**—खुश होना; **रोपनी**—धान की रोपाई करना; **पोखर**—छोटा तालाब; **भिंडे**—टीला, मिट्टी से बना ऊँचा स्थान, चबूतरा जैसा; **टेरना**—ऊँची आवाज में गाना; **दाँत किटकिटाने वाली ठंड**—जोर की ठंड, जिसमें दाँत भी बज उठें; **भोर**—सूर्य निकलने से पहले का समय; **लालिमा**—लाल रंग लिए प्रकाश; **कुहासा**—कोहरा; **आवृत**—ढका हुआ; **श्रमबिंदु**—पसीने की बूँदें; **करतल**—तालियाँ; **हावी होना**—प्रभावी होना; **चरम-उत्कर्ष**—सबसे ऊपर; **बोदा**—कम समझ वाला; **साध**—कामना; **सुभग**—भद्र, सौभाग्यशालिनी; **प्रबंधिका**—प्रबंध करने वाली स्त्री।

❑❑

'क्षितिज' भाग–2 (ब) काव्य–खंड

अध्याय — 1 पद *(सूरदास)*

कवि–परिचय

जीवन-परिचय—भक्तिकाल की मुख्यधारा के कृष्णभक्त कवि सूरदास का जन्म सन् 1478 में मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ था, जबकि कुछ विद्वान मानते हैं कि सूरदास जी का जन्म–स्थान दिल्ली के पास सीही ग्राम है। सूरदास जी जन्मांध थे या बाद में नेत्रहीन हुए इस बारे में मतभेद की स्थिति है। एक मान्यता के अनुसार सूरदास जी मंदिरों में भजन–कीर्तन किया करते थे। एक बार जंगल से गुजरते समय सूखे कुएँ में गिर गए तब स्वयं श्रीकृष्ण ने इन्हें कुएँ से बाहर निकालकर दिव्य दृष्टि प्रदान की। ये अष्टछाप कवियों में प्रमुख तथा महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य थे। सन् 1583 में पारसौली में इनका निधन हुआ।

प्रमुख रचनाएँ—सूरदास के सभी पद कृष्ण से सम्बन्धित हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी हैं। सूरसागर सबसे लोकप्रिय रचना है। कहा जाता है कि सूरसागर में सवा लाख पद में से मात्र दस हजार पद ही मिले हैं।

भाषा-शैली—सूरदास ब्रज भाषा के कवि थे। सूर वात्सल्य और शृंगार के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनके सभी पद गेय हैं। सूरदास जी की भाषा सहज, सरल और स्वाभाविक है।

कविता का सार

सगुण भक्तिधारा के प्रमुख रचनाकारों में सूरदास जी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके पदों में गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति गहरा अनुराग प्रकट हुआ है। प्रस्तुत पदों में श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनके वियोग में व्याकुल गोपियों का वर्णन है। वे योग का संदेश लेकर आने वाले उद्धव को तरह–तरह के उपालंभ देती हैं।

पहले पद में गोपियाँ उद्धव पर व्यंग्य करते हुए कहती हैं—हे उद्धव! तुम बहुत सौभाग्यशाली हो, जिसने अपने जीवन में कभी प्रेम नहीं किया। केवल हम ही नासमझ हैं, जो कृष्ण के प्रेम में दिन-रात मग्न रहती हैं। उनके प्रेम से अलग होना अब हमारे वश में नहीं है, क्योंकि जिस प्रकार चींटी गुड़ से चिपकी रहती है, उसी प्रकार हम भी श्रीकृष्ण के प्रेम में लिपटी हुई हैं।

दूसरे पद में गोपियाँ कृष्ण को निष्ठुर बताती हुई उद्धव से कहती हैं—हम तो श्रीकृष्ण के आने की आस से ही अपने मन को सँभाले बैठी थीं, परंतु श्रीकृष्ण ने स्वयं न आकर यह योग-संदेश भेजा है, जिसे सुनकर हमारी साँसों की डोर हमारे हाथ से छूटती जा रही है। उनके दर्शन के लिए ही हमारी साँसें अटकी हुई थीं। कृष्ण के इस वियोग संदेश को सुनकर अब हमसे किसी प्रकार का धैर्य नहीं रखा जाता।

तीसरे पद में गोपियाँ श्रीकृष्ण को अपना जीवनाधार बताते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजे में लकड़ी पकड़े रहता है, उसे छोड़ता नहीं, उसी प्रकार वे दिन-रात श्रीकृष्ण का नाम रटती रहती हैं। उन्हें योग का संदेश कड़वी ककड़ी के समान कड़वा लगता है। वे कहती हैं—योग का मार्ग उन्हीं के लिए ठीक है, जिनके मन चकरी के समान चलायमान हों।

चौथे पद में गोपियाँ श्रीकृष्ण पर व्यंग्य करती हुई कहती हैं—ऐसा प्रतीत होता है कि श्रीकृष्ण पूर्ण राजनीतिज्ञ हो गए हैं। वे चतुर तो पहले ही थे, परन्तु अब तो राजनीति के दाँव-पेंच भी सीख गए हैं। पहले के राजनीतिज्ञ जनता की भलाई के लिए कार्य करते थे, परन्तु अब तो वे स्वयं ही अन्याय करने लगे हैं। श्रीकृष्ण योग का संदेश भेजकर हम पर अन्याय ही कर रहे हैं। उनका यह व्यवहार राजधर्म के बिल्कुल विपरीत है।

शब्दार्थ

बड़भागी—भाग्यवान; **अपरस**—अलिप्त, अछूता; **तगा**—धागा; **पुरइनि पात**—कमल का पत्ता; **दागी**—दाग; **माहँ**—में; **प्रीति नदी**—प्रेम की नदी; **पाउँ**—पैर; **बोर्‌यौ**—डुबोया; **परागी**—मुग्ध होना; **अधार**—आधार; **आवन**—आगमन; **बिथा**—व्यथा; **बिरह दही**—विरह की आग में जल रही हैं; **हुतीं**—थीं; **गुहारि**—रक्षा के लिए पुकारना; **जितहिं तैं**—जहाँ से; **उत**—उधर; **धीर**-धैर्य; **मरजादा**—मर्यादा; **न लही**—नहीं रही; **जक री**—रटती रहती है; **सु**—वह; **करी**—भोगा; **मधुकर**—भौरा; **पठाए**—भेजा; **पाइहैं**—पा लेंगी; **तिनहिं**—उनको।

❑❑

अध्याय — 2 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद *(तुलसीदास)*

कवि-परिचय

जीवन परिचय—भक्तिकाल की सगुणधारा के अन्तर्गत आने वाली रामभक्ति शाखा के कवियों में सर्वश्रेष्ठ कवि और लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास का जन्म 1532 ई. में उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे एवं माता का नाम हुलसी था। एक जनश्रुति के अनुसार माता की मृत्यु और पिता के द्वारा त्याग दिए जाने पर इनका पालन-पोषण प्रसिद्ध सन्त बाबा नरहरिदास ने किया। इन्होंने ही तुलसी को ज्ञान एवं भक्ति की शिक्षा प्रदान की। इनका विवाह दीनबंधु पाठक की सुपुत्री रत्नावली से हुआ था। कहा जाता है कि वे अपनी रूपवती पत्नी के प्रेम में अत्यधिक आसक्त थे। इस पर इनकी पत्नी ने इनकी भर्त्सना की, गुरुकृपा से ये प्रभु-भक्ति की ओर उन्मुख हो गए। संवत् 1680 (सन् 1623 ई) में, काशी में इनका निधन हो गया।

रचनाएँ—रामचरित मानस, विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, कृष्णगीतावली, दोहावली, जानकी-मंगल, पार्वती-मंगल, वैराग्य-सन्दीपनी तथा बरवै-रामायण आदि।

भाषा-शैली—तुलसी ने ब्रज एवं अवधी दोनों ही भाषाओं में रचनाएँ कीं। मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा के प्रभाव में विशेष वृद्धि हुई है। तुलसी ने अपने समय में प्रचलित सभी काव्य-शैलियों को अपनाया है। तुलसी ने चौपाई, दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया, बरवै, छप्पय आदि अनेक छंदों का प्रयोग किया है। तुलसी ने काव्य में अलंकारों का प्रयोग सहज स्वाभाविक रूप से किया है। रूपकों के वे सम्राट कहे जाते हैं।

कविता का सार

प्रस्तुत 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरित मानस' महाकाव्य के बालखंड से लिया गया है। इस अंश में सीता के स्वयंवर के समय पर राम के द्वारा धनुष भंग हो जाने पर क्रोधित हुए परशुराम और राम-लक्ष्मण के मध्य हुए संवाद का वर्णन है।

जनकपुरी में हो रहे सीता-स्वयंवर में शिव धनुष के भंग (टूट) हो जाने के समाचार को सुनकर क्रोधित परशुराम स्वयंवर स्थल पर पहुँच जाते हैं। वहाँ पहुँचकर वह धनुष-भंग करने वाले को ललकारते हैं। परशुराम के क्रोध को शांत करने के उद्देश्य से राम परशुराम से कहते हैं कि शिव-धनुष तोड़ने वाला कोई आपका दास ही होगा। राम के इस वचन को सुनकर परशुराम और अधिक क्रोध में बोले, जो सेवा का कार्य करता है वह सेवक होता है और जो शत्रु के समान कार्य करे वह कैसा सेवक? जिसने भी यह कार्य किया है, स्वत: ही सामने आ जाए, नहीं तो सभी राजा मारे जाएँगे। परशुराम की इन बातों को सुनकर लक्ष्मण ने उनसे व्यंग्य भरे स्वर में कहा, "बचपन में तो उन्होंने ऐसे कितने ही धनुष तोड़ डाले तब तो किसी ने इस प्रकार क्रोध नहीं किया। फिर यह धनुष तो बहुत पुराना और कमजोर था जो छूते ही टूट गया। लक्ष्मण की इन बातों ने परशुराम के क्रोध रूपी आग में घी के समान कार्य किया। वे अत्यंत क्रोध में लक्ष्मण से बोले, "बालक समझकर मैं तेरा वध नहीं कर रहा हूँ। मूर्ख तू मुझे साधारण मुनि समझ रहा है! मैं धरती से क्षत्रियों का नाश करने वाला तथा बाल ब्रह्मचारी हूँ। अपने इस कठोर फरसे से मैने क्षत्रियों का नाश किया तथा सहस्रबाहु की भुजाओं को काट डाला। परशुराम की बड़बोली बातों को सुनकर उन्हें अपमानित करने के स्वर में लक्ष्मण ने उनसे कहा कि आप मुझे बालक समझकर भयभीत करने का प्रयास न करें। मैं ब्राह्मण समझकर आप पर हाथ नहीं उठा पा रहा हूँ। वैसे भी हमारे कुल में देवता, ईश्वर भक्त, ब्राह्मण और गाय पर वीरता नहीं दिखाई जाती है। लक्ष्मण की बातों से अपमानित और क्रोधित परशुराम ने लक्ष्मण को इंगित करते हुए विश्वामित्र से कहा कि यह बालक सूर्यवंश पर कलंक के समान और वध करने के योग्य है। परशुराम की बात के प्रत्युत्तर में विश्वामित्र ने उनसे कहा, "ऋषि-मुनि बालकों के दोषों की गणना नहीं करते हैं।" विश्वामित्र की बातों से प्रेरित होकर वह बोले कि आपके कारण मैं इस बालक को छोड़ रहा हूँ अन्यथा इसका वध कर गुरु-ऋण से मुक्त हो जाता। लक्ष्मण भी कहाँ चुप रहने वालों में से थे, वह बोले, "माता-पिता का ऋण आपने अच्छी तरह चुका दिया। गुरु-ऋण शेष है, जिसके लिए आप चिंतित दिखाई देते हैं। इतने समय में तो उस ऋण का ब्याज भी बहुत बढ़ गया होगा। आप गणना करने वालों को बुला लीजिए। मैं थैली खोलकर सारा ऋण चुका दूँगा। लक्ष्मण के ऐसे वचनों को सुनकर परशुराम के क्रोध की ज्वाला और अधिक भड़क उठी और वह लक्ष्मण को मारने के लिए तत्पर हो उठे। तब श्री राम ने अपने शीतल वचनों से उनका क्रोध शांत किया।

शब्दार्थ

संभुधनु—शिव धनुष; **भंजनिहारा**—तोड़ने वाला; **अरि**—शत्रु; **बिलगाऊ**—अलग; **अवमाने**—अपमान करते हुए; **लरिकाई**—बचपन में; **छति**—हानि; **जून**—जीर्ण, पुराना; **रोसू**—गुस्सा; **सठ**—दुष्ट; **जड़**—मूर्ख; **छेदनिहारा**—काटने वाला; **बिलोकु**—देखकर; **गर्भन्ह**—गर्भ के; **अर्भक**—बच्चे; **बिहसि**—हँसकर; **मृदु**—कोमल; **कुठारु**—कुल्हाड़ी, फरसा; **फूँकि**—फूँक से; **पहारू**—पहाड़; **कुम्हड़बतिया**—काशीफल का फल; **सरासन**—धनुष; **रिस**—गुस्सा; **सुराई**—वीरता; **छमहु**—क्षमा करें; **कौसिक**—विश्वामित्र; **निज**—अपने; **कलंकू**—दाग; **निरंकुसु**—उद्दंड; **असंकू**—शंका रहित; **प्रतापु**—यश; **दुसह**—असहनीय दु:ख; **गारी**—गाली; **कायर**—डरपोक; **हाँक**—जबरदस्ती; **घोरा**—भयंकर; **उरिन**—ऋण मुक्त; **काढ़ा**—निकालना; **ब्यवहरिआ**—हिसाब करने वाला; **विप्र**—ब्राह्मण; **सुभट**—योद्धा।

❑❑